

१६२५११



सर्गींग पं० जवाहर लाळजी कृत ।

सरस्वतीचल पूजा

माहात्म्य सहित ।

प्रकाशक—सूरचंद्र गुप्त ।

मालिक्त—जैनग्रंथ प्रभाकर कार्यालय, श्यामबाजार कलकत्ता ।

मुद्रक—श्रीलाल जैन, जैन सिद्धान्तप्रकाशक (पवित्र) प्रेस

८ महेंद्रबोसलेन श्यामबाजार कलकत्ता ।

न्योछावर !)

टोकन पर अर्ध चढानेका पाठ इन कोठों में देखकर निकालिये ।

पंथर	मोक्ष भए तीर्थकर्ता और कूटीके नाम	पत्रांक	पंथर	मोक्ष भए तीर्थकर्ता और कूटीके नाम	पत्रांक
१	कौवीरस गणधर्तों के प्रथम टोक	२१	१४	सोख भाए तीर्थकर्ता और कूटीके नाम	२१
२	कुं हुताय	१३	१५	सोखभाय	७
३	नमिनाथ	१६	१६	वासुपुण्य	०
४	करनाथ	१३	१७	अभिनेदननाथ	१२
५	मल्लिनाथ	१४	१८	बड्डा मंदिर	८
६	श्रेयांशनाथ	१०	१६	अननाथ	१३
७	धुपदेत	६	२०	सुमतिनाथ	२१
८	पद्मप्रभ	८	२१	शांतिनाथ	३
९	सुनिस्तुवत	१५	२२	महावीर	२१
१०	चंद्रप्रभ	८	२३	सुपाद्वनाथ	३
११	कादिनाथ	२१	२३	विमलनाथ	२०
१२	शीतलनाथ	६	२४	अजितनाथ	३
१३	मानंदनाथ	११	२५	नेमिनाथ	२१
			२६	पाद्वनाथ	१६
				सुवरणभद्र	

सर्वसिद्धिगकूट

विशुद्ध
स्वयंभू

श्रीसम्मेदाचलमाहात्म्य ।

देहा ।

स्वयंसिद्ध परमात्मा, महज सिद्ध हैं सार ।

तिनको वंदों भावसों, निश्चय करि निरधार ॥ १ ॥

वहिरभाव सम छोडकर, निजस्वभावमें लीन ।

होय होय झुकती गये, समस्त देख परवीन ॥ २ ॥

सब तीर्थनमें सार है, श्रीसमेदगिरिराज ।

बीस जिनेश्वर और बहु, मोक्ष गये मुनिराज ॥ ३ ॥

साक्षी कयनी चारता, जिन आगम अनुसार ।

कहता हूं कुछ वचनसों, सुनहु भविकजन सार ॥ ४ ॥

इस मध्य लोकमें एक लाख योजनका आम्बुद्वीप है उसके मध्यमें एक सुवशल मेरु है, जिसकी

दक्षिण दिशा में एक भरत नाम का क्षेत्र है। भरतक्षेत्र में छह खंड हैं, जिसमें यह आर्यखंड बाहुत प्रसिद्ध है। जिसमें मगध देश की राजगृही नगर में एक श्रेणिक नाम का राजा अपनी रानी चेलना सहित राज्य करता था।

राजगृही नगर के समीप विपुलाचल, उदयगिरि, सोनागिरि, रत्नागिरि और विहारगिरि नाम के पांच पर्वत हैं। उनमें विपुलाचल पर्वत पर श्री १००८ महावीर भगवान का समवसरण आया धनमालो ने राजा के समीप जाकर निवेदन किया कि, महापति! विपुलाचल पर जिलो की नाथ यक्ष मान भगवान का समवसरण आया है। सुनकर राजा इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपने शरीर पर के सारे वामभूषण उतारकर माली को दे दिये, और सिंहासन से उतर कर सात पैद (कदम) परवत की तरफ चलकर साष्टांग नमस्कार किया तत्काल ही शहर में घोषणा कर दी कि, महावीर भगवान का समवसरण आया है इसलिये सब लोग यज्ञ पूजन के लिये चले। और आप भी हाथों पर धातु होकर ध्वन के लिये चला। दूर से ही समवसरण देखकर हाँथ से उतर पड़ा और फिर समीप जाकर उसने भावपूर्वक बन्दना की। मनुष्य मंडलों में बैठकर भगवान की विव्यध्वनि द्वारा धर्ममृत का पान किया तत्पश्चात् अवसर पाकर हाथ जोड़ खड़ा होकर पूछा -- भगवान् ! श्रीभृगुदेव, अजितनाथ आदि तीर्थंकर किस क्षेत्र से मोक्ष को प्राप्त हुए और आपका निर्वाण कहाँ से होता है ? इसके सिवाय पूर्व काल में अनन्तान्त

चौबीसों किन्तु २ क्षेत्रों से मोक्ष गई है, भविष्यमें अनन्तान्त तीर्थंकर जो मोक्ष जावेंगे, सो किस क्षेत्र से जावेंगे ? और इन तीर्थंकरों के मध्यवर्ती समयमें कौन २ मुक्ति गये हैं चौबीस-तीर्थंकर जिसक्षेत्र से मोक्ष जाते हैं, उस क्षेत्र के दर्शन से क्या फल होता है ? और आगे ऐसी यात्रा किस २ ने की है तथा उन्हें क्या २ फल मिले हैं, इन सब प्रश्नों के उत्तर आप कृपाकर के विस्तारपूर्वक कहिये ?

यह सुनकर भगवानकी दिव्यध्वनि हुई कि राजा श्रेणिक ! तुमने बहुत अच्छे प्रश्न किये अब तुम उनका उत्तर चित्तको समाधान करके सुनो ।

पूर्वकालमें अनन्तान्त चौबीस तीर्थंकर श्रीसम्मोदशिलर पर्वतपरसे मोक्ष हुए हैं और आगे (भविष्यमें) भी जो अनन्तान्त चौबीस तीर्थंकर होंगे, वे श्रीसम्मोदशिलरसे ही मोक्ष जावेंगे इसी प्रकार चौबीसों तीर्थंकरों का जन्म भी श्रीअयोध्या नगरीमें होता है और होवेगा परन्तु वर्तमान कालमें केवल २० ही तीर्थंकर इस सम्मोदशिलर से मोक्ष गये हैं । क्योंकि श्रीऋषभदेव, कैलास पर्वत से वासुपूज्य चंपापुर से तथा नेमिनाथ गिरनारसे मोक्ष जा चुके हैं, और हम पावापुर से मोक्ष जावेंगे । शेष बीस तीर्थंकर श्री सम्मोदशिलरजी से निर्वाण प्राप्त हुये हैं । इसी प्रकार वर्तमान कालमें अयोध्या नगरीमें केवल ५ तीर्थंकरोंका जन्म हुआ है । शेष १६ का अन्यान्य नगरियों में हुआ है ।

यह सुनकर राजा श्रेणिर्कनी पूछा—भगवन् ! ऐसा होनैका क्या कारण है ? एकही स्थानमें जन्म और एकही स्थानमें मोक्ष होनैका जो नियम है उसका संग क्यों हुआ ?

भगवान् ने उत्तर दिया कि हे राजन् ! यह एक कालका दोष है । वर्तमानतः तोड़ाकोड़ी इत्स-पिणीकाल व्यतीत होनेपर कोई एक ऐसा ही काल आ जाता है जिसमें इस नियमका उल्लंघन हो जाता है अर्थात् उसके प्रभावसे अनेक तीर्थंकरों का जन्म और निर्वाण कथ्य २ स्थानों से हो जाता है ऐसे कालको हुंदावसर्पिणी कहते हैं इस विषयमें तुम कुछ सन्देह मत करो । यथार्थ में मौर्वी सौ तीर्थंकरों को जन्म भूमि अयोध्या है और निर्वाणभूमि श्रीसमीदशिखरजी की है ।

राजाश्रेणिर्क—भगवन् ! आपने जिस प्रकार कहा वही सत्यार्थ है अब कृपा करके यह बतलाइये कि श्रीऋषभदेवने लगाकर आप तकके निर्वाणक्षेत्रोंकी वंदना का फल क्या है और शिखरजी को यात्रा करके आगे किस २ को क्या २ फल मिले तथा आगे क्या २ मिलेंगे ?

श्री भगवान्—हे राजन् ! कैलाश पर्वतने दशहजार मुनि मोक्षको प्राप्त हुए हैं और श्रीसम्मोद शिखरजीपर बीस टोंकें हैं उनमें से सिद्धचरकूटसे श्री अजितनाथ तीर्थंकर एक आरव बरसीकरोड़ु चीवनलाञ्छ एक हजार मुनियों सहित मोक्ष गये हैं । इस टोंककी वन्दनाका फल वत्सीस करोड़ु उपवासको वरावर है दूसरे घवलदत्त कूटसे संभवनाथ तीर्थंकर नब्बे कोड़ाकोड़ी बहत्तरलाक्ष सात

हजार पांचसौ ब्यालीस मुनियों सहित मोक्ष पधारें हैं। इस कूटके दर्शन करने का फल ब्यालीस
 लाख उपवास करने के बराबर है तोखरे ध्यानन्द कूटसे श्रीभगिनन्दन तीर्थंकर तिवृत्तर कोडांकोडो
 सत्तर करोड़ सत्तर लाख सात हजार पांच सौ ब्यालीस मुनियों के सहित निर्वाण प्राप्त हुए हैं।
 इस कूटके दर्शन करनेका फल सोलह लाख उपवास करनेके फलके तुल्य है। शौथे अविवलकूटसे
 सुमतिनाथ तीर्थंकर एक कोडांकोडो बीरगसो करोड़ बहत्तर लाख सात सौ इक्यासी मुनियों सहित
 मोक्ष पधारें हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके समान है। पांचवे
 मोहनकूटसे पद्मप्रभ तीर्थंकर नित्यानवे करोड़ चौरासो लाख बियालीस हजार सातसौ सत्तासी
 मुनि सहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं। इस कूटके दर्शनका फल बत्तीस करोड़ उपवास करने के तुल्य
 है। छठे प्रभास कूटसे सुपाशनाथ तीर्थंकर तीन करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सातसौ ब्या-
 लीस मुनि सहित मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल बत्तीस करोड़ उपवास के बरा-
 बर है। सातवें ललितकूटसे चन्द्रप्रभ तीर्थंकर बीरगसो कोडांकोडि बहत्तर करोड़ अस्सीलाख
 बीरगसो हजार पाचसौ पचगन मुनि सहित मोक्षगये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल सोलह करोड़
 उपवासके तुल्य है। आठवें सुप्रभकूटसे श्रीपुष्पदन्त तीर्थंकर नित्यानवे करोड़ नव्वीलाख नौ
 हजार बार सौ अस्सी मुनि सहित मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल सोला करोड़

उपवासको बराबर है। नभमें विद्युत् तवर कूट से शीतल नाथ तीरंकर अठारह कोट्याकोटो विशालीस करोड वसीस लाख विद्यालीस हजार नीसे पांच मुनियों ने मुक्त पाई है। इस कूटके दर्शनका फल भी वसीस करोड उपवास करने के बराबर है दशवे' संकुलकूटसे श्रेयांसनाथ तीर्थंकर छयानवे कोट्याकोटो छयानवे करोड छयानवे लाख पैतालीस हजार पांचसी ब्यालीस मुनियोंने मुक्ति पाई है। इस कूटके दर्शन करने का फल भी एक करोड उपवास करने के बराबर है।

चंपापुरसे वास्तुपूज्य तीर्थंकर हजार मुनि सहित मोक्ष पथारे हैं। समेन्द्रशिखर के ग्याखवे संवल कूटसे विमलनाथ तीर्थंकर सत्तर कोट्याकोटो मान लाख छह हजार सानसी विद्यालीस मुनि मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन का फल एक करोड उपवास करने के बराबर है। बारहवे' स्वयंभूकूटने अमृतनाथ तीर्थंकर छयानवे कोट्याकोटो सतरह करोड सान लाख सनर हजार सात सौ मुनि मोक्ष गये हैं। इस कूटके दर्शनका फल एक करोड उपवास करने के तल्प है। नेरहवे' सुद- सत्तर कूटने धर्मनाथ तीर्थंकर उन्नीस करोड नी लाख तब हजार सानसी पचास मुनि मुक्त हुए हैं दर्शन करनेका फल एक करोड उपवास करनेके बराबर है। चोम्हवे शान्तिप्रभकूटसे श्रेयांस- नाथ तीर्थंकर एक के डकोटो नव करोड तब लाख नव हजार नव सौ विन्गानवे मुनियोंने पंचमर्गाति पाई है इसके दर्शन करने का फल एक करोड उपवास करने के बराबर है। पंद्रहवे' ज्ञानधर कूट

से श्रीकृष्णार्थनाथ तीर्थंकर छयानवे कीडाकोडो छयानवे करोड बत्तीस लाख छयानवे हजार सातसौ ब्यालीस मुनि मोक्ष धामको गये हैं। दर्शन करनेका फल एक करोड उपवास करनेके बराबर है। सोलहवे नाटक कूटसे श्री अर्याथ तीर्थंकर नित्यानवे करोड नित्यानवे लाख नित्यानवे हजार नवसे नव्वे मुनियोंने मुक्ति लक्ष्मी प्राप्त की है इस कूटके दर्शन करनेका फल छयानवे करोड उपवास करने के बराबर है सत्रहवे संवलकूटसे श्रीमह्मनाथ तीर्थंकर नित्यानवे करोड मुनि परमपद को प्राप्त हुए हैं। इसका दर्शन करना एक करोड उपवास करने के बराबर है अठारहवे निर्जराकूट से श्रीमुनिमुद्रतनाथ तीर्थंकर नित्यानवे कीडाकोडी, सतानवे करोड नौ लाख नौ सौ नित्यानव मुनि मुक्ति धामको गये हैं। इस टोंक के दर्शनका फल एक करोड उपवास करने के समान है। उन्नीसवे मित्रधर कूटसे श्री नमिनाथ तीर्थंकर नौ सौ कीडाकोडो पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ विया-लोस मुनि कर्मसे छूटे हैं। इस टोंकके दर्शनका फल एक करोड उपवास करने के बराबर है।

गिरनार पर्वतसे श्रीनिमिनाथ तीर्थंकर पांच सौ छत्तीस मुनिसहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं। तथा बहत्तर करोड सातसौ मुनि और गिरनार पर्वतसे मुक्त हुए हैं।

सम्मेदशिखरके घोंसवे मुवर्णमद्र कूटसे श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर एक करोड पैंतालीस लाख सात हजार सात सौ दश अधिक मुनि मुक्त हुए हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल एक करोड उपवास करनेके फलके बराबर है।

इसके पश्चात् श्रीगौतमगणधर बोले—हं राजन् ! ये महावीर भगवान् पावापुरी के पद्मसरोवर मेंसे छत्तीस मुनियों के सहित मोक्ष जावंगे तथा शिखरजीकी जिह्वोने पूर्वकालमें यात्रा की है, उन मेंसे थोड़ेके नाम मैं कहता हूँ—सगर, सागर, मधवा सनत्कुमार, प्रभासेन आनन्द, ललितदन्त, कुन्द-सेन, सेनादत्त परवृत्त, सोमप्रभ, वासुसेन आदि इनके सिवाय और भी हजारों राजाओंने यात्राकी है, परन्तु उनमेंसे दूरगोन केवल छन्दी को हुए हैं जो भव्य थे अमर्ष्यों की क्षयशय नहीं मिलती ।

अधिक—हं भगवान् ! शिखरजीकी यात्रा करनेका फल जो कुछ आपने कहा सो तो यथार्थ है परन्तु उससे अधिक तथा सम्पूर्ण फल और क्या है वह कृपा करके कहो ।

गौतमस्वामी—हे राजन् शिखरजीकी यात्रा करनेवाला फिर संसारमें अधिक नहीं भयङ्कता उनका। भव लेकर वह जीव पचाससे भवों भवाम्प ही सिद्धस्थानमें जाकर अजर अमर अलङ्क सादा जागती जो न होकर अवल रहता है यह नियम है । इसके सिवाय यात्रा करनेवाला नरक तिर्यक गतिमें तथा लोपर्याय में भी जन्म नहीं लेता ।

अधिक—यदि ऐसा है, तो भगवान् ! राजगने शिखरजीकी यात्रा की फिर उसे नरकगति क्यों प्राप्त हुई ?

गौतम०—राजगण शिखरजीकी यात्रा करने के लिये नहीं किन्तु चैतन्यमंडन हाथीकी एक-

इसके लिये मनुष्यन गया था । इसलिये वह यात्राकं फलका सागी नहीं हो सकता ।

अपेक्षक—भगवन् ! यदि कोई बिना भावसे शिखरलोकी यात्रा करे तो उसकी नरक तिर्यक गति छूटे कि नहीं ।

गौतम०—राजन् ! जिस प्रकारसे बिना भावसे कारं मिथो भीठी लगती है और दवाई रोगको शांत करती है उसी प्रकारसे बिना भावसे की हुई यात्रा भी ऐसा नहीं है कि फलवती न हो ।

अपेक्षक—भगवन् ! आपने कहा कि भयको यात्रा होती है परंतु अमध्यको नहीं होती सो यह बलकार्य कि, खास शिखरलोमें भौलादिक तथा पृथ्वी जल वनस्पति एकेन्द्रियादिक जीव राशि हैं वे सब भय हैं अथवा तमय ?

गौतम०—सामेदशिक्षर पर जितने जीवराशि हैं वे सब भय राशि हैं ।

अपेक्षक—भय किसे कहते हैं ?

गौतम०—जो जीव मुक्त अवस्था प्राप्त करने वाले होते हैं वे भय कहते हैं ।

इस प्रकार राक्ष अपेक्षक श्रीसमैदशिक्षर सिद्ध होकर महात्म्य सुनकर बहुत आनंदित हुआ और अपनी रानो बेलना सखित यात्राके लिये बला परंतु ज्योंही पूर्वतके निकट पहुंचा त्यों ही वहां के निवासी कालाग्नि ज्वलन देवेनि वारो और ओर अंधकार कर दिव्य । बलवृद्धि, भेदगजंघ पाषा-

पांशुपि आदि अनेक प्रकारके औषध भी बिना किसी तब रानी कैलनाले समझाय—नाथ ! आपको यात्रा नहीं होवेगी क्योंकि जिस समय आपकी दिगम्बर मुनिराजके गलेमें मरा हुआ सर्प डाला था उसी समय आपको नरकगतिर्का वंश पड़ चुका है । इसलिये इस पर्याप्तमें तीर्थराजके वरदान होना असंभव है यह सुनकर राजा आपके कर्माँ की गति जानकर अपने नगरको लौट गया ।

बोला ।

सिद्ध क्षेत्र सुप्रसिद्ध है, जिन आगम में सार ।
अर्धदास लुल्लक कहै, श्रीसनेदगिरि पार ॥ १ ॥
ताकी कथनी नारता, कह गये श्रीशुनिराज ।
अब तारीकी व्यवस्था, यह कीनी निज काज ॥ २ ॥

इति समाप्त ॥





श्रीसम्ममदाचल पूजा ।

वेदा ।

सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सु धान ।
शिखरसमेद सदा नमो, होय पापकी हान ॥ १ ॥
अगणित मुनि जहैं गए, लोकशिखरके तीर ।
तिनके पदपंकज नमो, नाशै भवकी पीर ॥ २ ॥

अद्विष्ट ।

है उज्ज्वल वह क्षेत्र सुमति निरमल सही ।

परम पुनति सुठौर महा गुणकी मही ॥

सकल सिद्धि दातार महा रमणीक है ।

बन्दों निज सुखहेत अचल पद देत है ॥ ३ ॥

सोखा ।

शिखरसमेद महान, जगमें तीर्थ प्रधान है ।

महिमा अदभुत जान, अल्प मती में किमि कहों ॥ ४ ॥

सुन्दरी छंद ।

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है । अति सु उज्ज्वल तीर्थ महान है ॥

करहिं भक्ति सु जे गुण गायकें । वरहिं सुर शिवके सुख जायकें ॥ ५ ॥

अबिछ ।

सुर हरि नर इन आदि, और बंदन करें ।

भव सागरतैं तिरैं, नहीं भवमें परैं ।

सफल होय तिन जन्म शिखर दर्शन करें,

जन्मजन्मके पाप सकल छिनमें टरें ॥ ६ ॥

पदको छंद ।

श्रीतीर्थंकर जिनवर जु वीश, अरु मुनि असंख्य सब गुणन ईश ।

पहुंचे जहँतैं कैवल्य धाम, तिनको अब भेरी है प्रणाम ॥ ७ ॥

गीतिका छंद ।

सम्मेदगढ़ है तीर्थ भारी सबहिंको लज्जल करै ।

चिरकालके जे कर्म लागे द्योतैं छिनमें टरै ॥

हे परमपावन पुण्यदायक अतुलमहिमा जानिये ।

हे अनूप सुरूप गिरिवर तासु पूजन ठानिये ॥ ८ ॥

वेत्ता ।

श्रीसम्भेदशिखर सदा, पूजों मन वच काय ।

हरत चतुर्गतिदुःखकों मनवांछित फल दाय ॥ ९ ॥

ॐ श्रीसम्भेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर । संवैषट् ।

ॐ श्रीसम्भेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ श्रीसम्भेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

॥ प्रकार तीन बार ओंमें पुष्पों से आहननादि करें ।

अथ अष्टक ।

अङ्कित ।

क्षीरोदधि सम नीर सु निरमल लीजिये ।

कनक कलशमें भरके धारा दीजिये ॥

पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाये जी ।

नरकादिकदुख टरे अचलपद पाय जी ॥ १ ॥

ॐ श्रीसम्मेदशिखरसिद्धसेत्रेभ्यो विंशतितीर्थकराष्टसंख्यातष्टुनिसिद्धपदमाप्तेभ्यो
जनजरास्त्युविनाशनाथ जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

पयसों घसि मलयागिरिचंदन लाइये ।

केसरि आदि कपूर सुगंध मिलाइये ॥

पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।

नरकादिक दुख टरे अचलपद पाय जी ॥ २ ॥

ॐ श्रीसम्मेदशिखरसिद्धसेत्रेभ्यो विंशतितीर्थकराष्टसंख्यातष्टुनिसिद्धपदमाप्तेभ्यो
संसारतापविनाशनाथ चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तन्दुल धवल सुवासित उज्ज्वल धोयकै ।

हेमरतेनकं थार भरो शुचि होयकै ॥

पूजों शिखरसमेद सुमनचक्राय जी ।

नरकादिकदुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ३ ॥

ॐ श्रीसम्मेदाक्षिखरभिद्धक्षेत्रेभ्यो विस्तन्तितीर्थकराद्यंसंख्यातस्यनिसिद्धप्राप्तैभ्यो अक्षय-
पदप्राप्तये अक्षयान् निर्वर्षामाणि स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरतरुके सम पुण्य अनूपम लीजिये ।

कामदाहदुखहरण चरण प्रभु दीजिये ॥

पूजों शिखरसमेद सुमनचक्राय जी ।

नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिवरभिद्धक्षेत्रेभ्यो विश्रित्तितीर्थकारद्यंसंख्यातस्यनिसिद्धपदप्राप्तैभ्यः
कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वर्षामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कनकधार नैवेद्य सु षट्सतै भरे ।

देखत क्षुधा पलाय सुजिन आगै धरे ॥

पूजौं शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।

नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विशतितीर्थकरादिब्रह्मसंख्यातसुनिसिद्धपदमाप्तेभ्यः

शुभारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वाप्नोति स्वाहा ॥ ५ ॥

लेकर मणिमय दीप सुज्योति प्रकाश है ।

पूजत होत सुज्ञान मोहतम नाश है ॥

पूजौं शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।

नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विशतितीर्थकरादिसंख्यातसुनिसिद्धपदमाप्तेभ्यः

मोहोन्नाशकारविनाशनाय दीपं निर्वाप्नोति स्वाहा ॥ ६ ॥

दशविधि घूप अनूप अगनिमै खेवहूँ ।

अष्टकर्मको नाश होत सुख लेवहूँ ॥

पूजों सिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।

नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थकरादिअसंख्यातसुनिसिद्धपदभासेभ्यो
अष्टकर्मदहनाय घूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

एला लौंग सुपारी श्रीफल लाइये ।

फल चढाय मनवांछित शिवफल पाइये ॥

पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।

नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो विंशतितीर्थकरादिअसंख्यातसुनिसिद्धपदभासेभ्यो
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गन्धाक्षत पुष्प सुनेत्रज लीजिये ।

दीप धूप फल लेकर अर्घ सु दीजिये ॥

पूजों शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।

नरकादिकदुख टरै अचलपद पाय जी ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धसेत्रेभ्यो विंशतितीर्थकरादिषसंख्यातमुनिसिद्धपदमातेभ्यो
अनर्घपदमाप्तये नम्र्यं निर्वापामीति स्नाहा ॥ ९ ॥

पदमातेभ्यो

श्रीविंशति तीर्थकर जिनेन्द्र । अरु असंख्यात जहते मुनेन्द्र ॥

तिनको करजोरि करौ प्रणाम । जिनको पूजौ ताजि सकल काम ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धसेत्रेभ्यो विंशतितीर्थकरादिषसंख्यातमुनिसिद्धपदमातेभ्यो
नम्र्यं निर्वापामीति स्नाहा ॥ १० ॥

अबिड ।

जे नर परम सुभावनेतै पूजा करै ।

हरि हलि चक्रा होय राज छह खंड करै ॥

फेरि होय धरणेंद्र इंद्र दवी घरै ।

नानाविध सुख भोगि बहुरि शिवतिय वरै ॥ ११ ॥

इत्याशे नंदः (शुष्पाजलि सिपेत्)

जोगीरास ।

श्रीसम्मेदशिखरगिरि उन्नत, शोभा अधिक प्रमानो ।

विंशति तिहपर कूट मनोहर, अदभुत रचना जानो ॥

श्रीतीर्थारवीस तहांतै शिवपुर पहुंचे जाई ।

तिनके पदपंकज जुग पूजौ अर्घ प्रत्येक चढाई ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धचैत्रेभ्यो अर्घे निर्वपायीति स्वाहा ॥ १ ॥

नं० २४ अजितनाथ सिद्धवर कूट ।

प्रथम सिद्धवर कूट सुजानो, आनंद भंगलदाई ।

अजितनाथ जहंत शिव पहुंचे पूजो मनवचकाई ॥

कोडि जु अस्सी एक अरब मुनि, चौवन लाख जु गाई ।

कर्म काटि निर्वाण पधारे, तिनको अर्घ चढाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसिद्धक्षेत्रसिद्धवरकूटतै अजितनाथजिनेन्द्रादि मुनि ब्रसीकोटि एक
अरब चौवनलाख सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निवेपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

नं० १४ सम्भवनाथ धवलकूट ।

धवलदत्त है कूट दूसरो, सब जियको सुखकारी ।

श्रीसम्भव प्रभु सुक्ति पधारे पापतिमिरको टारी ॥

धवलदत्त दे आदि मुनी, नव कोडाकोडी जानो ।

लाख बहचरि सहस्र वियालिस पंचशतक ऋषि मानो ॥

कर्मनाश करि शिवपुर पहुंचे वंदो शीश नवाई ।

तिनके पदजुग जजहुं भावसों हरषि २ चितलाई ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मदसिखरशिखरेश्वरधवलकूटेश्वर सम्भवलायजिनैन्द्रादि मुनि नौकोडाकोडीबहचर-
लाखग्यालीसहजारपांचसौसिद्धपदमाप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः ॥ ३ ॥

नं० १६ अभिनंदननाथ आनंदकूट ।

कीर्ण

आनंदकूट महासुखदाय । अभिनंदन प्रभु शिवपुर जाय ॥

कोडाकोडि बहचर जान । सत्तरकोडि लखछत्तिस मान ॥

सहस्र वियालिस शतक जु सात । कहे जिनागममें इह भांत ॥

ए ऋषि कर्मकाटि शिवगण । तिनके पदजुग पूजत भए ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीसमैव शिखरसिद्धसेत्रे आनंदकूटं श्रीशमिन्दनमिन्दं प्रादिहृनिबहुरकोडाकोडी
सत्तरकोटि छत्तिसलाख व्यालिसहजार सातसौ सिद्धपदान्तैः श्यः सिद्धसेत्रेभ्यो ब्रह्म
निर्वापामीति समाप्ता ॥ ४ ॥

नं० ११ सुमतिनाथ अविचलकूट ।

अखिल ।

अविचल चौथो कूट महासुखधाम जी ।

जहते सुमतिजिनेश गये निर्वाण जी ॥

कोडाकोंडी एक मुनीश्वर जानिये ।

कोटि चौरासी लाख बहुर मानिये ॥

सहस्र इक्यासी और सातसौ गाह्ये ।

कर्म काटि शिव गए नमो शिर नाह्ये ॥

सो थानक में पूजूं मनवचकाय जी ।

पाप दूर होजाय अचलपद पाय जी ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्पद्शिवस्वसिद्धक्षेत्राविचलकूटं सुगतिनाथजिनेन्द्रादि मुनि एककोट्य-
कोट्यौ चौरासीकोटि बहुरालाख इक्यासी हजार साहसौ सिद्धपदमतेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो ब्रह्म
निर्वाणमीति स्वाहा ॥ ५ ॥

नं० ८ पद्मप्रभ मोहनकूट ।

मोहन कूट महान परम सुंदर कह्यो ।

पद्मप्रभ जिनराज जहाँ शिवपुर लह्यो ॥

कोटि निन्यानवे लाख सतासी जानिये ।

सहस्र तियालिस और मुनीश्वर मानिये ॥

सप्त सैकरा सत्तर ऊपर वीसजू ।

मोक्ष गण ग्रनि तिनकों नमूं नित शीसजू ॥

कहें 'जवाहरलाल' दोयकर जोरिके ।

अविनाशीपद दे प्रभु कर्मन तोरिके ॥ ६ ॥

भौं हीं श्रीसम्मोदशिखरसिद्धक्षेत्रमोहनकूटतै पञ्चमयजिनेन्द्रमुनि निन्यानर्धकोडि सतासीलाख-
तितालीसहजार स.तसौसखर वीससिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्थे निर्वपायीति
स्वाहा ॥ ६ ॥

नं० २२ सुपार्थनाथत्रभासकूट ।

सोपडा ।

कूट प्रभास महान, सुंदर जनमन मोहनो ।

श्रीसुपार्थ भगवान, मुक्तिगण अधनाशके ॥
कोडाकोडि उनचास, कोडि चौरासी जानिये ।

लाख बहुर मान, सात सहस्र हैं सात सौ ॥

और कहे व्यालीस अहैं मुनि मुक्ती गए ।

तिलहि नभै नित शीश, दास जवाहर जोरकर ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं ऊं गीममैन्दुखिरामिन्दुवेज्रभासकृटौ भिसुपार्धनाथजिर्नेद्रादिमुनि वनचास-
कोटाकोटी चौगसीकोटि वृक्षचरलाख सातद्वार सातसौ विद्यालीस सिद्धपदभासेभ्यः
सिद्धमेवेभ्यो अर्घं निर्दिषामीति स्थादा ॥ ७ ॥

नं० १० चन्द्रप्रभुललितकृत ।

कोषा ।

पावन परम उत्तम है, ललितकृत हैं नाम ।
चन्द्रप्रभु शिवकों गए वदों आठों जाम ॥
कोडाकोडी जानिये, चौरासी ऋषिमान ।
कोटि बहतर हम कहे, अस्सी लाख प्रमान ।
सहस चौरासी पंचशत, पचपन कहे मुनिद ॥

वसुकरमनको नाशकर, पायो सुखको बंद ।

लःलितकूटतै शिवगए, बंदौ शीश नमाय ॥

जिनपद पूजौ भावसौ, निजहित अर्थ चढ़ाय ॥ ८ ॥

श्री श्री श्री सम्मोद शिखर सिद्धसेनललितकूटतै चन्द्रप्रभजिः द्र प्रादिद्युनि चौरासीकोडाकोडीबह-
त्तरकोडिअसीलाख चौरासीहजार पांचसौ पचपन सिद्धपदमासेभ्यः सिद्धसेनेभ्यो अर्थ
निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

नं० ७ पुष्पदंतसुप्रभकूट ।

पदकी छन्द ।

श्रीसुप्रभकूट सु नाम जान । जंह पुष्पदंतको मुक्ति थान ॥

मुनि कोडाकोडि कहे जु भाख । नव ऊपर नवधर कहे लाख ॥

शतचारि कहे अरु सहमसात । ऋषि अस्सी और कहे विख्यात ॥

मुनि मोक्षगए हनि कर्मजाल । बंदौ करजोरि नमाय भाल ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं ओसम्मेदसिखरादिक्षेत्रसुप्रकृतैः पुण्यदन्तार्जिनद्रादिद्युनि एककोटाकोटीनिन्या-
नवेलाग्य सातहज र चारसौ असी सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति
स्वाहा ॥ ६ ॥

नं० १२ शीतलनाथ विद्युतकूट ।

सुन्दरी छन्द ।

सुभग विद्युतकूट सु जानिये । परम अदभुत तापर मानिये ॥
गए शिवपुर शीतलनाथजी । नमहुं तिन इह करघर माथजी ॥
मुनि जु काँडाकोडि अठारहू । मुनि जु कोडिवियालीस जानहू ॥
कहे और जु लाखबतीस जू । सहस्रग्यालस कहे यतीश जू ॥
अवर नौसौ पांच जु जानिये । गए मुनि शिवपुरको मानिये ॥
करहिं जे पूजा मन लायके । घरहिं जन्म न भवै आयेके ॥
ओं ह्रीं ओसम्मेदसिखरादिक्षेत्रसुप्रकृतैः पुण्यदन्तार्जिनद्रादिद्युनि एककोटाकोटीनिन्या-

लीसकोहि=लीसलाखव्यालीमहजारनौ-पांच सिद्धपदपाप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्थ
निर्धेयाप्राप्ति स्व-हा ॥ १० ॥

नं० ६ श्रयांसनाथ संकुलकूट ।

सोनीरखा-।

कूट तु संकुल परम मनोहर, श्रीश्रयान् जिनराई ।
कर्मनाश कर शिवपुर पहुंचे, बंदों मनवचकाई ॥
छयानम काडाकोडी जाने, छयानवकोडि प्रदानो ।
ल.ख छयानवे मरुम सुनीश्वर, सढे नव अब जानो ॥
ता ऊर न्यालीम कहे हैं श्रीमुनिके गुण गौन ॥
त्रिविपयोग करि जे। कोई पूजे. सहजानंदपद पावै ॥
सिद्ध नमो सुत्रदायक जगमें, आनंद मंगलदाई ।

जजौ भावसौ परण जिनैकर, ह्वयजोडि शिरनाई ॥

परम मनोहर धान सु पावन, देखत विघन पलाई ॥

तीन काल नित नमत जवाहर भेटो भवभटकाई ।

जइतै जे मुनि सिद्ध भए हैं, तिनको शरण गहाई ।

जा पदको तुम प्राप्त भए हो, सो गद देहु मिलाई ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदाशिलरामिद्धसेत्रसंकुलकूटं श्रीश्रेयांसनाथनिन्द्राविमुनि छयानवे
कोदाकोड़ी छयानवेकोटि छयानदेलाख नवहजार पांचसौ विघालीस सिद्धपदमाशेभ्यः
सिद्धसेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

नं० २३ विमलनाथसुवीरकुलकूट ।

सुसुमलता लब्ध ।

श्रीसुवीरकुल कूट परम सुन्दर सुखदाई,
विमलनाथ भगवान जहां पंचमगति पाई ।

कोडि जु सत्तर सात लाख षटसहस्र जु गार्ह,
सात सतक मुनि और वियालीस जानो भाई ॥

केवा ।

अष्टकर्मको नष्टकर, मुनि अष्टमक्षिति पाय ।

तिनप्रति अर्घ चढावहुं, जनम मरण दुख जाय ॥

विमलदेव निरमल करण, सब जीवन सुखदाय ।

मोतीसुत वंदत चरण, हाथजोर शिरनाय ॥

प्रो ह्रीं श्रीसम्पेदशिवसिद्धसेत्र सुनीरकुलकृतों श्रीविमलनाथजिनेन्द्र भाविष्ठुनि सत्तरकोडि
सातलाख छहहजार सातसौव्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः सिद्धसेत्रेभ्यो अर्घ निर्वयामीति
दयाहा ॥ ४ ॥

नं० १३ अनन्तनाथ स्वयंभूकृत ।

प्रविष्ट ।

कृष्ट स्वयंभू नाम परम सुन्दर कह्यो ।

प्रभु अनंतजिननाथ जहां शिवपद लह्यो ॥
मुनि जु कोटाकोटि छ्यानवे जानिये ।

सत्तर कोटि जु सत्तरलाख प्रमानिये ॥

सत्तर सहस्र जु और मुनीश्वर गाइये ।

सात सतक ता ऊपर तिनको ध्याइये ॥
कहै जवाहरलाल सुनो मनलायके ।

गिरिवरकों नित पूजो अति सुखपायके ॥

सोवडा ।

पूजत विधन पलाय, क्राद्धि सिद्धि आनंद करै ।

सुर शिवको सुखदाय, जो मनवच पूजा करै ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धलेशस्त्रयं धृक्कृतैर्ब्रन्तनाथोजेन्द्रादि मुनि छयानवैकोट्या-
केडी सचस्किोहि सचमलाख सचरहजार सातसौ सिद्धपदप्रप्तेभ्यः सिद्धलेशेभ्यो अर्थ
निर्वणमीति स्वाहा ॥ १ ॥

नं० १८ धर्मनाथ सुदत्तकूट ।

कूट सुदत्त महाशुभ जान । श्रीजन धर्मनाथको थान ॥
मुनि कोडाकोडी उनईस । और कहे ऋषि कोडि उनीश ॥
लाख जु नव नौसहस सु जान । सात शतक पंचानव मान ॥
मोक्षगण वे कर्मनचूर । दिवस रु रयनि नगो भरपूर ॥
महिमा जाकी अतुल अनूप । ध्यावत वर इंद्रादिक भूप ॥
शोभत महा अचलपद पाय । पूजों आनंद मंगल गाय ॥

वेहा ।

परम पुनीत पवित्र अति, पूजत शत सुरराय ।

तिहं ध्यानकर्त्ता देख कर, मोतीसुत गुणगार्य ॥

पावन परम सुहावनो, सब जीवन सुखदाय ॥

सेवत मुर हरि नर सकल, मनवांछितपदपाय ।

ॐ श्री श्रीसम्मेदाक्षिरसिद्धसेत्रसुदत्तकृष्ण धर्मनाथ जिनेन्द्रादिश्रुति उषीसकोडाकोडी
उषीसकोडि नोलाख नोहजार सातसौ पंचानव सिद्धपदमोक्षेभ्यो अर्धं निर्ब-
पामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

नं० २० शान्तिनाथ शांतिप्रभकूट ।

सुगीतिका-छन्द ।

श्रीशांति प्रभ है कूट सुन्दर अति पवित्र सु जानिये ।

श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र जहँतै परमधाम प्रमानिये ॥

नव जु कोडा कोडि मुनिवर लाख नव अव जानिये ।

नौ सहस्र नवसै मुनि निन्यानव हृदयमें धर मानिये ॥

देहा ।

कर्मनाश शिवको गए, तिन प्रति अर्घ चढ़ाय ।
त्रिविधयोग करि पूज हैं, मनवांछित फलपाय ॥

ओं ह्रीं श्रीलम्बेश्वरसिद्धसेवकातिप्रमद्वृत्तैः शान्तिनाथ निर्देहादिभुनि नोकोडा-
कोडि नोलाल नोहजार नोसै निबानवै सिद्धपदमाप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्य
निर्वाणमीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नं० २ कुन्धुनाथ ज्ञानधरकूट ।

भोतिका-छन्द ।

ज्ञानधर शुभकूट सुंदर परम मन मोहन सही ।
जहते श्रीप्रभु कुन्धुस्वामी गए शिवपुरकी मही ॥
कोडा सु कोडी छ्यानवै मुनि कोडि छ्यानव जानिये ।
अर लाख वत्तिस सहस्रछ्यानव शतकसांत प्रमानिये ॥

देहा ।

और कहे न्यालीस मुनि, सुमिरौं हिये मंझार ।

तिनपद पूजों भावसे, कर भवदधिसे पार ॥ १६॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्सिखरसिद्धसेत्रस्रनधरकूटतै श्रीकुंभनाथजिनेन्द्रादि मुनि छयानवैकोट्या-
कोटी छयानवे कोटि वत्सीसलाख छयानवैहजार सातसौ न्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः
सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्बपायीति स्वाहा ॥ २ ॥

नं० ४ अरनाथ नाटककूट ।

देहा ।

छूट जु नाटक परमशुभ, शोभा अपरम्पार ।

जहतैं अरजिनराज जी, पहुंचे मुक्तिमंझार ॥

कोडिनिन्यानव जानि मुनि, लाखनिन्यानव और ।

कहे सहस निन्यानवै, बन्दों कर जुग जोर ॥

अष्टकर्मको नष्ट करि, मुनि अष्टमक्षिति पाय ।
ते गुरु मो हृदय बसो, भवदधि पार लगाय ॥

सोरठा ।

तारण तरण जिहाज, भवसमुद्रके बीचमें ।
पकरो मेरी बांह डूबतसे राखो मुझे ॥
अष्टकरम दुख दाय, ते तुमने चुरे सबै ।
केवलज्ञान उपाय, अविनाशीपद पाइयो ॥
मोतीसुत गुणगाय, चरणन शीशनवायके ।
मेढो भवभटकाय, मांगत अच बरदान यों ॥ १७ ॥

ॐ श्रीसम्मदशिखरसिद्धेश्वरनाटककृतं
निर्यानवै लाख निर्यानवै हजार सिद्धपदप्राप्तभ्यो सिद्धेश्वरभ्यो अर्घ निर्वपामीति
स्वाहा ॥ २ ॥

नं० ५ मल्लिनाथसम्बलकूट ।

सुन्दरी छन्द ।

कूट सम्बल परमपवित्र जू । गए शिवपुर मल्लिजिनेश जू ॥
मुनि जु छ्यानवकोडि प्रमानिये । पदजजत हृदये सुख आनिये ॥

मोतीधाम छन्द ।

भजौ प्रभुनाम सदा सुखरूप, जजौ मनमें घर भाव अनूप ।
टरै अधपातिक जाहिं सु दूर, सदा जनको सुख आनंदपूर ॥
डरै ज्यों नाग गरुडको देखि, भजै गजजुथ जु सिंहय पेखि ।
तुमनाम प्रभू दुखहर्ण सदा, सुखपूर अनूपम होय मुदा ॥
तुमदेव सदा अशरणशरणं, भट मोहवली प्रभुजी हरणं ।
तुम शरणगही हम आय अबै, मझ कर्मवली दिढ चूर सबै ॥१८॥

ॐ श्रीसम्भोगिस्तु सिद्धचेत्रसम्बलकृतैः श्रीपण्डिनाथजिनेन्द्रादि मुनि ऋष्यान्वै कोटी
सिद्धसेत्रेभ्योऽर्थं निर्वपायीति स्वाहा ॥

नं० ९ मुनिसुव्रतनिर्जरकूट ।

मयभवकिसकपोल छंद ।

मुनिसुव्रत जिननाथ सदा आनंदके दाई ।
सुंदर निर्जरकूट जहाँतैं शिवपुर जाई ॥
निन्यानवकोडाकोडि कहे मुनि कोडि सत्याना ।
नव लख जोडि मुनिन्द कहे नौसैं निन्त्याना ॥

सोखा ।

कर्म नाशि कृष्णराज. पंचगतिके सुख लहे ।
तारणतरण जिहाज, मो दुखदूर करो सकल ॥

सुखेंगप्रधान ।

बली मोहकी फौज प्रभुजी भगाई, जग्यो ज्ञानपंचम महासुखदाई ।
 समोशरण धरणेंद्रने तब बनायो । तवै देव सुरपति सबै शीशनायो ॥
 जय जय जिनैद्र सुशब्द उचारी, भए आज दरशन सबै सुखसकारी ।
 गए सर्व पातिक प्रभू मूरहीं, जब दर्श कीने प्रभू दूरहीं ॥
 सुनी नाथ श्रवनो जु तरी बढाई, गहे शाण हमने तुम्हारा सु आई ।
 बली कर्मनाशे जबै मुक्ति पाई, तिन्है हाथजोरें सदा शीश नाई ॥ १९ ॥
 ओं श्री त्मेदभिरशुद्धि तिरिजकरुनहुनि सुप्रतनाथजिनेद्र, दि सुनिनिम्या नवैकोदाकोही
 गसान्वे कोडि नोअस नासेनिन्यानै सिद्धप्रदायेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वे०
 स्वाहा ॥ ३ ॥

सुखेंगप्रधान

नं० ३ नमिनाथमित्रधरकूट ।

ओगोस्ता ।

कूट मित्रधर परममनोहर. सुन्दर अति छविदाई ।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर जहँतैं, अविनाशीपदपाई ॥
नौसै कोडाकौडी सुनिवर, एक अरव ऋषि जानो ।
लाख पैतालीस सातसहस, अरु नौसै व्यालिस मनो ॥

देवा ।

वसु करमनकौ नाश कर, अविनाशी पदपाय ।
पूजे चरणसरोजकौ, मनवांछितफलदाय ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्भेदशि वसिष्ठसेव विप्रधर कूटसै नमिनाथजिनेन्द्र. दिगुनि नोसो कोटा-
कोटि एकअरव पैतालीसलाख सा हजार नोसो व्यालीस सिद्ध दम सेभ्यो सिद्ध-
क्षेत्रेभ्योऽर्थ निर्वपामीति स्वाहा ॥

नं० २६ पार्श्वनाथ सुवैगभद्रकूट ।

वेदा ।

सुवर्ण भद्र सु कूटपै, श्री प्रभुपारसनाथ ।

जहैं तैं शिवपुरको गए, नमो जोरि जुगहाथ ॥

चिंतनी कंब ।

मुनि कौडिबियासी लाखचैरारो शिवपुरवासी सुखदाई ।
सहस्रपैतालीस सातसौ व्यालीस तजिके आलस गुणगार्ई ॥
भवदधितं तारण पातित उधारण सबदुखहारण सुखकीजै ।
यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी शिवपदभारी मोदीजै ॥

फळङ्गी कंब ।

यह दर्शनकूट अनंत लह्यो । फल षोडशकोटि उपास कह्यो ।
जगमें यह तीर्थ कह्यो भारी । दर्शन करि पाप कैंटे सारी ॥

मोतीदाम-छन्द ।

टरै गति बंदत नर्क तिरुंच । कबहुं दुखको नहिं पावै रंच ॥
यही शिवको जगमें है द्वार । अरे नर वन्दो कहत 'जवार' ॥

देहा ।

पारशप्रभुके नामतैं, विघन दूरि टरि जाय ।
ऋद्धि सिद्धि निधि तासुको, मिलिहं निशिदिनआय ॥ २१ ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्पेदसिलरसिद्धसेत्रेभ्यो विंशतितीर्थंकरादिअसंख्यातस्तुनिसिद्धपदभासेभ्यो
अनर्घ्यपदमाप्तये अर्व निर्वपाप्मीनि स्वाहा ॥ ९ ॥

अच्छिदा ।

जे नर परमसुभावनतैं पूजा करै, हरिहालि चक्री होंय राज्यषटखंडकरै ॥
फेरिहोयघरणेंद्रइंद्रपदवीधरें, नानाविधि सुख भोगि बहुरि शिवतिय वरै ॥

आर्षार्चनदः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अथ समुच्चयपूजा ।

बोहा ।

याविध बीस जिनेशके, बीसो शिखर महान ।
और असंख्य मुनीश जहं, पहुंचे शिवपदथान ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्राबतर अवतर संवौषद् ।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तः ॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरक्षेत्र ! मम संनिहितो भव भव वषद् ॥

अथ अष्टक ।

गीतिका छन्द ।

पदमद्रहको नीर निर्मल, हेमझारीमें भरों ।
तृपारोग निवारनको, चरणतर धाराकरों ॥

सम्भेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुरगये ।

सो थान परमपवित्र पूजो, तासु फल पुनिसंचये ॥ १ ॥
ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदमात्रेभ्यो श्रीसम्भेदशिखरभिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजराभृत्यविनाश-
नाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन कपूर मिलाय केसर, नीरसों घसि लाइये ।

जिनराज पापविनाश हमरे, भवताप मिटाइये ॥

सम्भेदगढतैं मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।

सो थान परमपवित्र पूजो, तासु फल पुनिसंचये ॥ २ ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदमात्रेभ्यः श्रीसम्भेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाश-
नाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षरके सम त्याग तंदुल, कनकथारनमें भों ।

अक्षय सु पदके कारणे जिनर, जपद पूजा करों ॥

सम्भेदगढतै मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।

सो थान परमपवित्र पूजो, तासु फल पुनिसंचये ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं अलंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्भेदसिखरसिद्धसेत्रेभ्यः अक्षयपदमाप्तये
अक्षताम् निर्वपायीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कुंद कमलदिक चमेली गंध कर मधुकर फिरै ।

मदनवाण विनाशदेको प्रभुचरण आगे धरै ॥

सम्भेदगढतै मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुरगये ।

सो थान परमपवित्र पूजो, तासु फल पुनिसंचये ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं अलंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्भेदसिखरसेत्रेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्प
निर्वपायीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज मनोहर थालनै भर, हरपकर ले आनै ।

करहु पूजा भावसो, नर क्षुधा रोग भिटावनै ॥

सम्मेदगढतै मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।

सो थान परमपवित्र पूजौ, तासु फल पुनिसंचये ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्रप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिवरसिद्धक्षेत्रेभ्यः हृधारोगवि-
नाशनाय नैवेद्यं निर्वणामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दीप ज्योति प्रकाश करके, प्रभुके गुण गावने ।

मोह तिमिर विनाश करके, ज्ञान भानु प्रकाशने ॥

सम्मेदगढतै मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुरगये ।

सो थान परमपवित्र पूजौ तासु फल पुनिसंचये ॥

ओं ह्रीं असंख्यातमुनिसिद्धपदप्रप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिवरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहाशकार-
विनाशनाय दीपं निर्वणामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

वर धूप सुंदर ले दशांगी, ज्वलनमाहि सु खेदये ।

वसु कर्मनाशनके सु कारण, पूज प्रभुकी कीजिये ॥

सम्पेदगढतै सुनि असंखे, कर्महर शिवपुर गये ।

सो थान परमपवित्र पूजो, तासु फल पुनि संचये ॥ ७ ॥
ओ ह्रीं असंख्यातसुनिसिद्धपदमाप्तेभ्यः श्रीसम्पेदशिखरसिद्धसेबेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं

निर्वापामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

उत्तकृष्ट फल जगणंहि जेतै, बूढ करकै लाइये,
जो नेत्र रसना लगै सुंदर, फल अनूय चढाइये ।

सम्पेदगढतै सुनि असंखे, कर्महर शिवपुर गये,
सो थान परमपवित्र पूजो, तासु फल पुनि संचये ॥ ८ ॥

ओ ह्रीं असंख्यातसुनिसिद्धपदमाप्तेभ्यः श्रीसम्पेदशिखरसिद्धसेबेभ्यो योक्तफलप्राप्तये फलं
निर्वापामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसुद्रव्ययुत शुभ अर्घ लेकर, मनप्रफुल्लित कीजिये ।
तुमदास यह वरदान मार्गे, मोक्षलक्ष्मी दीजिये ॥

सम्भेदगढतै मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये ।

सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनि संचये ॥

ओं ह्रीं असंख्यातद्युतिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्भेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदमाप्तये अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

नितकरै जे नरनारि पूजा, भाव भाक्ति सु लायके ।

तिनको सुजस कह कहैं 'जवाहर' हरषमनमें धारके ॥

ते हैं सुरेश नरेश खगपति, समझ पूजाफल यही ।

सम्भेदगिरिकी करहु पूजा, पायहो शिवपुरमही ॥

ओं ह्रीं असंख्यातद्युतिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्भेदसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णाधिं निर्वपामीति
स्वाहा ॥ १० ॥

कविस

परम शिखरसम्भेद-सबहीको है सुख करता ।

बंदे जे नरनारि तिन्होके अध सब हरता ॥
 नरकपशू गति दर सुखस जगके बहु पावें ।
 नरपति सुरपति होय फेरि शिवपुरको जवैं ॥

बोधा ।

जे तीरथ बंदे नहीं, सुने धर्म नहि सार ।
 ते भववनमें भ्रमहिंगे, कबहुं न पावैं पार ॥
 नरभव उत्तम पायके, आवककुल अवतार ।
 पूजा जिनवरकी करें, ते उतरैं भवपार ॥
 सबावीधजोग जु पायकें, शिखर न बंदें सार ।
 रतन पदारथ पाय ते, देत समुद्रमें डार ॥

नं० ११ आदिनाथसर्वासिद्धवरकूट ।

ब्रह्म कालिक ।

प्राणी हो आदीश्वर महाराज जी, अष्टापद शिवथान हो ।

पूजत सुर हर नर सकल, सो पावे निर्वाण हो ॥

प्राणी हम पूजत हनहीं सदा, यह नाशै भवभव भीति हो ।

प्राणी पूजौ मनवचकाय कर, ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेन्द्रादिद्युनिसिद्धपदप्रतिभ्यः श्रीकलावागिरिसिद्धसेत्रेभ्यो अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ॥

नं० १५ वासुपुण्यमंदारगिरि ।

ब्योरडा ।

वासुपुण्य जिनराज चम्पापुरतें शिव गये ।

मनवचजोग लगाय, पूजों पदयुग अर्घले ॥ २ ॥

ओं ह्रीं वासपुण्यसिद्धपदप्रतिभ्यः श्रीचम्पापुरसिद्धसेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

० २५ नेमिनाथऊर्जयंतकूट ।

वेहा ।

नेमीश्वर तालि राजमति. लीनी दीक्षा जाय ।

सिद्ध भद्र गिरनारतें, पूजों अर्घ वनाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथसिद्धपदग्रामेभ्यः श्रीगिरनारिसिद्धचैत्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

नं० २० महावीर ।

सुन्दर छंद ।

वर्द्धमान जिनेश्वर पूजये. सकलपातक दूर सु कीजिये ।

गये पावापुरतें मोक्षको, तिनहि पूजत अर्घसंजोयके ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरसिद्धपदग्रामेभ्यः श्रीपातापूरसिद्धचैत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

नं० १ चौवीसगणवरप्रथमटोंक ।

देहा ।

तीर्थंकर चौवीसके, गणनायक हैं जेह ।

तिनको पूजों अर्घ ले, मनवच धारि सनेह ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं चतुर्विंशतिजिनगणधरचक्रकमलेभ्यो अर्घं निर्वपायीति स्वाहा ॥ ५ ॥

सिद्धक्षेत्र जे और हैं, भरत क्षेत्र के ठाहिं ।

और जे अतिशय क्षेत्र हैं, कहे जिनागममाहि ॥

निनके नाम सु लेतही, पाप दूर हो जाय ।

ते सब पूजों अर्घ ले, भवभवमें सुखदाय ॥

ओं ह्रीं श्रीभरतभोगसम्बन्धी सिद्धक्षेत्राऽतिशयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥ ६ ॥

सोमठा ।

द्वीप अढाईमाहि, सिद्धक्षेत्र जे ओग हैं ।

पूजों अर्घ चढाय, भवभवके अधनाश हैं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं ढाईद्वीपकेविंषि विद्यमानसिद्धक्षेत्रेभ्योऽर्घं नि० ॥ ७ ॥

अटिठ्ठ ।

पूजों तीस चौवीस परमसुखदाय जू

भूत भविष्यत वर्तमान गुणगाय जू ।

कहे विदेहके वीस नमों शिरनाथ जू

अचौ अर्घ बनाथ सु विघन पलाय जू ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीभूतभविष्यद्दर्शनसंबंधी त्रिशक्तुर्निश्चिती नैर्देव्यो विदेहक्षेत्रे स्थाप्यतविद्यमान
विंशतितीर्थकरेभ्यश्च अर्घ्यं नि० ॥ ८ ॥

दोहा ।

कृत्याकृत्रिम जे कहे, तीन लोकके माय ।

ते सब पूजौ अर्घ ले, हाथजोर शिरनाथ ॥

ओं ह्रीं श्रीतीनलोकसम्बन्धीकृत्याकृत्रिमजिनालग्ननिर्विघ्नेभ्यो अर्घ्यं निर्व० ॥ ९ ॥

अथ जयमाल ।

छोलतरंग छंद ।

भनमोहन तीरथं शुभ जानो, पावनपरम सु क्षेत्र प्रमानो ।

उन्नतशिखर अनूपम सौहै, देखत ताहि सुरासुर मोहै ॥ १॥

बोद्धा ।

तीरथ परम सुहावनो, शिखरसमंद विशाल ।
कहत अद्भुति उक्तिसौ, सुखदायक जैमाल ॥

चौप ई १५ मात्रा ।

सिद्धक्षेत्र तीरथ सुखदाह, वंदत पाप दूरि हुइ जाइ ।
शिखरशीशपर कूट मनोझ, कहं वीन अति शोभायेज्य ॥ १ ॥
प्रथम सिद्धवरकूट सुजान, अजितनाथको मुक्ति सुधान ।
कूटतनो दरशन फल एह, कोटि वतीस उपास गिनैह ॥ २ ॥
दूजो धवलकूट है नाम, संभवप्रभु जहं ते शि धाम ।
दरश कोटि प्रोपधफल जान, लाख वियालिम कहो वखान ॥ ३ ॥
आनंदकूट महा सुखदाय, जहंते अभिनंदन शिवजाय ।

कूटतनो दरशन इम जान, लाख उपासतनो फलमान ॥ ५ ॥
 अविचलकूट महासुख वेश, मुक्ति गए जहं सुमति जिनेश ।
 कूट भावधरि पूजै कोय, एक कोटि मोषधफल होय ॥ ५ ॥
 मोहनकूट मनोहर जान, पद्मप्रभु जहतै निर्वान ।
 कूटपूज फल लेहु सुजान, कोटि उपास कहो भगवान ॥ ६ ॥
 मनमोहन है कूट प्रभास, मुक्ति गए जहं नाथ सुपास ।
 पूजै कूट महाफल होय, कोटि बर्तीस उपास जु सोय ॥
 चंद्रप्रभुके मुक्ति सु धाम, परमविशाल लालतघट नाम ।
 कूटतनो दरशन फलजान, मोषध सोलह लाख बखान ॥ ८ ॥
 सुप्रभ कूट महासुख दाय, जहतै पुष्पदंत शिवपाय ।
 पूजै कूट महाफल लेव, कोडि उपास कहो जिनदेव ॥ ९ ॥

श्रीविद्युत्तवर कूट महान, मोक्षगये शातल धार ध्यान ।
 पूजै त्रिविधजोग करकोय, कोडि उपासतनो फल होय ॥ १० ॥
 संकुलकूट महा शुभ जान, श्रीश्रेयांश गये शिवधान ।
 कूटतनो दरसन फल सुनो, कोडि उपास जिनेश्वरभनो ॥ ११ ॥
 कूट सुवीर परमसुखदाय, विमल जिनेश जहां शिवपाय ।
 मनवच दरश करै जो कोय, कोटि उपासतनो फल होय ॥ १२ ॥
 कूट स्वयंभू सुभग सु नाम, गये अनंत अमरपुः धाम ।
 यही कूटको दरशन करै, कोडि उपासतनो फल धरे ॥ १३ ॥
 है सुदुत्तवर कूट महान, जहँतै धर्मनाथ निरवान ।
 परमविशाल कूट है सोय, कोटि उपास दरश फल होय ॥ १४ ॥
 कूट प्रभास परमशुभ कल्यो, शांतिनाथ जहँतै शिव लह्यो ।

छूट तनो दरशन है सैर, एक कोडि प्रोपधफल होय ॥ १५ ॥
 परम ज्ञानधर है शुभकूट, शिवपुर कुन्धु गये अवछूट ।
 जागै पूजे जो कर्जाडि, फल उपवास कहो इक कोडि ॥ १६ ॥
 नाटककूट महाशुभ जान, जहँ शिवपुर अर भगवान ।
 दरशन करै कूटको जोग, छथानव कोडि वासफल होय ॥ १७ ॥
 सेवलकूट मल्लि जिनगज, जहँ मोक्ष भये शुभकाज ।
 कोडिदरशफल कहो जिनेश, कोडि एक प्रोपध शुभ वेश ॥ १८ ॥
 निर्जरकूट कहो सुखदाय, मुनिसुगत जहँ शिव जाय ।
 कूटतनो अब दरशन सोय, एक कोडि प्रोपधफल होय ॥ १९ ॥
 कूट मित्रधरतै नमि मुक्त, पूजत पांय सुरासुर युक्त ।
 कूटतनो फल है सुखकन्द, कोटि उप.स कहो जिनचन्द ॥ २० ॥

श्रीप्रभु पार्श्वनाथ ! नराज, चहुंगतिसे छूटे महाराज ।
 सुवरणभद्र कूटको नाम, तासों मोक्ष गये सुखध.म ॥ २१ ॥
 तीन लोक हितकरण अनूप, बंदत ताहि सुरासुर भूप ।
 चिंतामणि सुरवृक्ष समान, ऋद्धि सिद्धि मंगलसुखदान ॥ २२ ॥
 नवनिधि चित्रबेलि समान, जातैं सुख अनूपम जन ।
 पारस और कामसुरधेन, नानाविध आनंदको देन ॥ २७ ॥
 व्याधिधिकार लाहि सब भाज, मनचीतें पूरे होय काज ।
 भवदधिरोग विनाशक सोय, औ प्राधिजगैं और न को ॥ ४॥
 निरमल परम धान उत्कृष्ट, बंदत पाप भजैं अरु दुष्ट ।
 जो नर ध्यावत पुण्य कमाय, जरागावन सब कर्म नशाय ॥ २५ ॥
 कटें अनादिकालकैं पाए, भजैं कल छिनभैं सतपाय ।

गरपी इंद्र कर्णेद्र जु सदे, और खर्गेद्र खर्गेद्र जु नवै ॥२३॥
 नित सुर सुरी करै उचार, नाचत गावत विविधप्रकार ।
 बहुविधि भक्ति करै मनलाय, विविधप्रकार बादित्रबजाय ॥२७॥
 हम हम हमता बजै मृदंग, धन धन धन बजे मुहचंग ।
 झुनझुन झुनझुन झुनिथा झुने, सर सर सर सारंगी धुने ॥२८॥
 सुरली बीन बजे धुनि मिष्ट, पटहा तूर सुरान्वित पुष्ट ।
 सब सुरगण धुति गावत सार, सुरगण नाचत बहुत प्रकार ॥२९॥
 झन नन नन ना नूपुर वान, तन नन नन ना तोरत तान ।
 ता थिह थिह थिह थिह चाल, सुर नाचत नाचत निजसुभाल ॥
 नाचत गावत नाना रंग, लेत जहाँ सुर आनंद संग ।
 नितप्रति सुरजहं वंदत जाय, नानाविध के मंगल गाय ॥ ३१ ॥

अनहदधुनिकी मोद जू होय, प्रापति वृष की अतिहा होय ।
 तातैं हमको सुख दे सोय, गिरिवर वंदों करधरि दोय ॥ ३२
 मारुत मंद सुगंध चलेय, गन्धोदक जहं नित वर्षेय ।
 जियकी जाति विरोध न होय, गिरिवर वंदों करधरि दोय ॥ ३३
 ज्ञान चरन तप साधन सोय, निजअनुभवको ध्यान जु होय ।
 शिवमंदिरको द्वारो सोय, गिरिवर वंदे करधरि दोय ॥ ३४ ॥
 जो भवि वंदे एक हि वार, नरक निगोद पशू गति टार ।
 सुर शिवपदको पावै सोय, गिरिवर वंदों करधरि दोय ॥ ३५ ॥
 जाकी महिमा अगम अपार, गणधर कहत न पावैं पार ।
 तुच्छबुद्धि में मति कर हीन, कही श्रुतिवश केवल लीन ॥ ३६ ॥

धृता कुन्द ।

श्रीसिधखेतं अति सुखदेतं, शीघ्रहि भवदधि पार करं ।

अरिर्कर्मविनाशिनः किं कुतः ॥ २७ ॥ जगत्त्रिवारं जगत्त्रिवारं ॥ २७ ॥
 ओं ह्रीं श्रीं भूभुवः स्वः ॥ २८ ॥ जगत्त्रिवारं जगत्त्रिवारं ॥ २८ ॥

सोमः ।

शिवः सु पूजै नो सदा । न न चकननचितलाय ।
 दास जगद्गुरु यों कही, सो शिवपुरको जाय ॥

दत्तात्रेयः ।

इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः समाप्ता ।

कवि परिचयः ।

कविः ।

पिता सु मोतीलाल “ब्रह्मदत्त” के कहे । काका श्रीमलाल गुणन पूरे लहे ।
 मास मूरी गोत तु मारिल जानिये, काण जिनेश्वर धर्म यही ठा आनिवे ॥ १ ॥
 दोहा ।

यग के लहने ना कही, कही धर्म के काज ।
 श्रीजिनकर की मक्ति से, मिलिहे सुख समज ॥ २ ॥

करम तुम चूण कर हारे, जय शिवकामिनि किन्तु जिनेश्वर सबही के धारे ॥
 प्रभू तुम अगणित चलधारी, अतुल अनन्त चतुष्टयधारक सबको सुखकारी ॥
 प्रभू तुम तपलक्ष्मी धरता, धर पधुरंधर धीर जिनेश्वर स्वर्गशक्ति करता ।
 प्रभू तुम रत्नत्रयधारी, तारणतण्ड जिनेश्वर स्वामी सबको हितकारी ॥
 प्रभू तुम संशयमदहारी, निर्विकार निर्दोष जिनेश्वर गुणअनन्तधारी ।
 प्रभू तुम काममुषटविजई, धरा संवस्र ब्रजपाल जिनेश्वर चारितदलसजई ॥
 प्रभू तुम मोहमहामारो, क्रोधमानसायाको त्यागो शिवपदको धारो ।
 प्रभू गुणमागर है धारी, ज्ञानजिहवा बँठके गणधर पधुंचे नहिं धारी ॥
 प्रभू गुणकी गति बेलि श्रद्धी, यतन बिना लगमंडल ऊपर आपुहितैं जु चढी ।
 कुदेव यक्ष अब जी नित चाहैं, पै आपने धरद्दीके भीतर यक्षको नहिं लाहैं ॥
 प्रभू तुम सबको सुखदाहैं, अन्यत्र नमके पार कटत हैं तुमरे गुणगार्ह ।
 जगतमें बहुत पदार्थ जानो, सुगतर चिंतामणि पारस हैं नवनैथिको मानो ॥
 अरे इक भव जानो मई, जे नियोग ये लियको होई किंचित सुखदाहैं ॥
 करैं जे प्रभुचरणन की सेवा, जनम जनम सुखदायक प्रभुजी तुमही हो देवा ॥

तुमही हो कृपानाथ स्वामी, तुम बंधव जगतात दयानिधि अन्तरके जामी ।
 प्रभू तुम सब सुखकेदाता, जगजीवनको पार लगावत देते सुखमाता ॥
 प्रभू तुम गुणरत्नखाना, तुम पुनीत समदर्शी प्रभुजी तुम्ही सब जाना ॥
 प्रभू विन दीनकालमाही, नहि नहि शरण जीवको कोई या जगके माहीं ॥
 प्रभू तुम करुणानिधि नाथा, तुमसनमुख हम ठ ठे निशिदिन जोरे जुगहाथा ॥
 होय नहि जबलों निश्चाना, जगनिवास छूटै अब नार्ही दुःखको जो दाना ॥
 प्रभू तुम चरणानुप्रवासा, भवसब मिलै करत या अजी है 'जबार' दासा ।
 और नहि मानत प्रभू तुमसों, नै दयाल दीक्षे वरदाना खुसी होय हमसों ॥

कीहा ।

त्रिभुवनपति अरजी सुनो, कृपानाथ गुणखान ।

भवसागरतैं काटियं, सिवपद दे भगवान ॥ १ ॥

अट्टल ।

अथ वैशाल बंदी नवमी शुभ जानियं । शुक्र वार के दिना समाप्त मानिये ॥
 एक वसु नव को अंक एक अब फिर लिखो । संवत यद्दी प्रमाण सरस मनमें लखो ॥

देता ।

जे नर नारी भावसों, पूर्वे श्री जिनदेव ।
 नाना विध सुखभोगके, पावे शिव स्वयमेव ॥ ३ ॥
 सिंह को हक दृष्टांत हैं, सुनो भव्य जन लोच ।
 अद्यांतें पूजा करें, सब समान जु होय ॥ ४ ॥
 बिन श्रद्धा पूजा करें, कांच ममान सु जान ।
 रतन बढो है मोलकी, धुमोलो कांच समान ॥ ५ ॥
 बहूत करी तो क्या अई, भावन मनमें लाय ।
 श्रद्धा से योगी करै, पावे पद सुख दाय ॥ ६ ॥
 श्रद्धासे योगी करै, लेहु बहूत कर मान ॥
 प्रायति होवै पुण्य की, पावे पद निरवान ॥ ७ ॥
 तुच्छ बुद्धि मेरी मही, पंडिन करो विचार ।
 मूल चक्र अब होय जो, लीज्यो चतुर सुधार ॥ ८ ॥
 ॥ समाप्त ॥

सर्वं पकारं ते जीनयं श्रुते, मिलदेलत पता...

जीनयं पभाकरं सागलिग,

७।२ मंदयगोसेल, श्यामनगर,

मल्लिकार्जुन ।

